मीडिया फ़ेलोशिप्स फॉर रिपोर्टिंग ऑन एन.सी.डीज़ 2018-19

विषय: चिरकालिक श्वास रोग (क्रोनिक रेस्पिरेटरी डिज़ीसेस/सी.आर.डी)

पृष्ठभूमि नोट

रीच मीडिया फेलोशिप के पहले संस्करण में हम आपके आवेदन का स्वागत करते है | हम इस नए फेलोशिप के ज़रिये आपको असंक्रामक रोगों (चिरकालिक श्वास रोग/क्रोनिक रेस्पिरेटरी डिज़ीसेस/सी.आर.डी, डायबिटीज/मधुमेह, दिल के रोग, कैंसर/कर्क रोग, और मानसिक रोग) पर रिपोर्टिंग करने में सहायता करेंगे । हालांकि ये रोग संक्रमण से नहीं फैलते और इसी कारण इन्हे नॉन कम्युनिकेबल डिज़ीज़ेस (एन.सी.डीज़) भी कहते हैं, यही रोग भारत में होने वाली मौतों में 60% का कारण बन चुके हैं[1]| आनेवाले दो दशकों में असंक्रामक रोगों के कारण हमारे देश में रोगों का बोझ और भी ज़्यादा बढ़ सकता हैं ।

जिस प्रकार हम टीबी पर फेलोशिप के द्वारा पत्रकारों की सहायता करते थे, ठीक उसी प्रकार हम इस रीच मीडिया फेलोशिप के माध्यम से उनकी सहायता करेंगे ताकि वे असंक्रामक रोगों से जुड़े हुए अपने आस-पास होने वाले मुद्दों की पहचान करें और उन पर निरंतर और उत्तम प्रकार से लिखें ।

एन.सी.डी फेलोशिप के पहले संस्करण का विषय है – चिरकालिक श्वास रोग (क्रोनिक रेस्पिरेटरी डिजीसेस/सी.आर.डी) । सी.आर.डी श्वास नली व फेफड़ों के अन्य भागों में होने वाले उन रोगों को कहा जाता है जो लम्बे समय तक रहते हैं । जिन सी.आर.डी के चलते खुल के सांस लेने में दिक्कत होती है, उन्हें चिरकारी अवरोधी फुप्फुस रोग (क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिसीसेस/सी.ओ.पी.डी) कहते हैं । फेफड़ों के व्यावसायिक रोग और पल्मोनरी हाइपरटेंशन सामान्य रूप से होने वाले सी.आर.डी हैं । पर्यावरण और संवृत/घर के अंदर होने वाले वायु प्रदूषण, धूम्रपान का धुआं, काम-काज के दौरान रसायन, धूल से लम्बे समय तक संपर्क, और बचपन में शरीर के श्वसन प्रणाली के निचले भाग के रोगों के होने से सी.आर.डी होने की संभावना बढ़ जाती है| अस्थमा /दमा एक और सी.आर.डी है जिससे 2016 में भारत के 3% लोग ग्रसित थे ।

भारत में सी.ओ.पी.डी/सी.आर.डी

हमारे देश में सी.ओ.पी.डी और दमा/अस्थमा ह्रदय रोग के बाद मृत्यु-दर के बोझ (10.9%) की दूसरी वजह बन चुके हैं । 1990 और 2016 के बीच सी.ओ.पी.डी से पीड़ित लोगों की संख्या में 29.2% और अस्थमा से पीड़ित लोगों की संख्या में 8.6% की बढ़ौतरी पायी गयी । जैसे-जैसे हमारे देश की आबादी की उम्र ढलेगी और ज़्यादा लोग वृद्धावस्था में पहुंचेंगे, श्वास रोग से पीड़ित लोगों की संख्या भी उतनी ही बढ़ेगी ।

असंक्रामक रोगों, खासकर सी.ओ.पी.डी, से ग्रसित लोगों की संख्या हर प्रदेश में अलग-अलग पायी जा रही है, इसलिए इन मुद्दों की गहराईयों में जाकर तथ्यात्मक व व्याख्यात्मक समाचार लेखन बहुत ज़रूरी है ।

[1] Global Status Report on NCDs 2014 – WHO http://www.who.int/nmh/publications/ncd-status-report-2014/en/

भारत के प्रदेशों में किये गए एक अध्ययन के अनुसार इस्केमिक ह्रदय रोग और साथ ही DALY में सबसे ज़्यादा बढ़ौतरी (उम्र मानकीकरण किया हुआ) कम विकसित प्रदेशो में पायी गयी | इन्ही प्रदेशों में सी.ओ.पी.डी जैसे असंक्रामक रोग और दूसरे संक्रामक रोगों के चलते पहले से ही पीड़ितों की तादाद काफी ज़्यादा है ।

इस्कैमिक ह्रदय रोग, स्ट्रोक/पक्षाघात, डायबेटीज़/मधुमेह के होने की संभावना बढ़ाने वाले कारण देश के हर भाग में पाए जा रहे हैं । ये कारण हैं हाई बीपी/उच्चरक्तचाप, उच्चकोलेस्ट्रोल, उच्च फास्टिंग प्लाज्मा ग्लूकोस और अधिक वज़न व मोटापा । घर के अंदर और बाहर प्रदूषण से संपर्क के चलते देश के उत्तरी भागों में लोगों को सी.ओ.पी.डी ज़्यादा हो रहा है और इस रोग का बोझ और भी बढ़ रहा है । इन प्रदेशों में इस रोग से होने वाली मौतों की दर विकसित प्रदेशों से दुगुनी है ।

सी.आर.डी जैसे असंक्रामक रोगों का कुछ हद तक इलाज संभव है | मगर शरीर को इन रोगों से पूरी तरह मुक्ति नहीं मिल सकती | इलाज स्वरुप दवाइयाँ मिलती हैं जिससे श्वास नल्ली कुछ हद तक फैलती है और हांफना कम होता है । इसके अलावा धूल और धूम्रपान के धुंए से दूर रहने की सलाह भी दी जाती है ।

मीडिया और खबरों से कैसे मदद मिल सकती हैं ?

उत्तम खबर व लेखों के माध्यम से मुख्य धारा के मीडिया से लोगों की एन.सी.डी पर जानकारी और समझ में निश्चित बदलाव ला सकती है । मीडिया निम्नलिखित रूपों से प्रभावशाली भूमिका निभा सकती है :

- असंक्रामक रोगों के, ख़ास-तौर से श्वास रोगों के मूल तथ्यों को समझाना |

- लोगों को बताना कि श्वास रोग देश-प्रदेश और पूरी दुनिया में किस तादाद में मौजूद हैं |

- सी.आर.डी की जांच और रोग होने पर लोग अपनी देख-रेख कैसे कर सकते हैं |

- सी.आर.डी होने के पर्यावरण, व्यवहार, आनुवंशिक व पोषण सम्बंधित कारण |

- लोगों को सी.आर.डी के प्रति जागरूक करना |

- सी.आर.डी से जुड़ी सरकारी योजनाओं में बदलाव लाने की कोशिश |

- बच्चों और महिलाओं में सी.आर.डी पर लेख लिखना |

- असंक्रामक रोगों के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना में ह्रदय रोग और स्ट्रोक/पक्षाघात को ज़्यादा महत्त्व मिला है। इस योजना पर केंद्रित लेखन |

- लेखन या कवरेज के द्वारा देश के प्रत्येक प्रदेश में लोगों को श्वास रोगों से कैसे बचाएँ और पीड़ित कैसे अपना ध्यान रखें, इन पर प्रकाश डालना |

प्रमाणों के आधार पर लिखी गई खबरों से लोग स्वस्थ जीवन व्यतीत करना चाहेंगे । वे अपने आस-पास के वातावरण में परिवर्तन लाने की कोशिश करेंगे[2], उदहारण के लिए: पर्यावरण संरक्षण, साफ़ खान-पान और सुरक्षित यातायात व्यवस्था, जो असंक्रामक रोगों से बचाव और पीड़ितों की देख-रेख में महत्त्वपूर्ण होती हैं। रीच मीडिया फेलोशिप इन ज़रूरतों की पूर्ती के लिए बने हैं । ये फेलोशिप मीडिया में असंक्रामक रोगों पर प्रभावशाली संभाषण को केंद्रित करने में मदद करते हैं |

2

Rigotti NA, Wakefield M. Real People, Real Stories: A New Mass Media Campaign That Could Help Smokers Quit. Ann Intern Med. 2012;157:907-909. doi: 10.7326/0003-4819-156-1-201201010-00541